NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 10-02-2025

विषय सूची

पवित्र उपवनों पर उच्चतम न्यायालय का निर्देश

शहरी विकास के लिए बजटीय आवंटन

लिंग पहचान के लिए SRY जीन

2026 तक वामपंथी उग्रवाद (LWE) को समाप्त करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता

संक्षिप्त समाचार

फोर्ट विलियम का नाम परिवर्तित कर विजय दुर्ग कर दिया गया

भारत में पोटाश खनन

कुक द्वीप समूह (Cook Islands)

बाल्टिक राष्ट्र (Baltic Nations)

नेत्ज़ारिम कॉरिडोर

मिथुन (Mithuns)

अभ्यास 'साइक्लोन 2025'

पवित्र उपवनों पर उच्चतम न्यायालय का निर्देश

समाचार में

- भारत के उच्चतम न्यायालय ने निर्देश दिया कि पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) के मार्गदर्शन में पवित्र उपवनों का राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण किए जाने की आवश्यकता है।

समाचार के संबंध में अधिक जानकारी

- उच्चतम न्यायालय ने पवित्र वनों को 'वन' के रूप में वर्गीकृत करने और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (WLPA) 1972 के अंतर्गत उन्हें 'सामुदायिक रिजर्व' के रूप में अधिसूचित करने का निर्देश दिया।
- अदालत ने राज्य सरकार को उनके संरक्षण और प्रबंधन की देखरेख के लिए एक 'सामुदायिक रिजर्व प्रबंधन समिति' के गठन का आदेश दिया।

पवित्र उपवन क्या हैं?

- पवित्र उपवन वृक्षों या वन क्षेत्रों के वे खंड हैं जिन्हें स्थानीय समुदायों द्वारा उनके धार्मिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्त्व के कारण पारंपरिक रूप से संरक्षित किया जाता है।
- इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है: कर्नाटक में देवराकाडु, केरल में कावु, मध्य प्रदेश में सरना, राजस्थान में ओरान, महाराष्ट्र में देवराई, मणिपुर में उमंगलाई, मेघालय में लॉ किंतांग/लॉ लिंगदोह, उत्तराखंड में देवन/देवभूमि आदि।
- पवित्र उपवन जैव विविधता को संरक्षित करते हैं, जलवायु को नियंत्रित करते हैं, जल संरक्षण करते हैं, आजीविका को बढ़ावा देते हैं, सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हैं तथा पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

सामुदायिक रिज़र्व क्या हैं?

- सामुदायिक रिजर्व की अवधारणा को वन्यजीव संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2002 के माध्यम से समुदाय-प्रबंधित पारिस्थितिकी प्रणालियों को मान्यता देने और उनकी सुरक्षा करने के लिए प्रस्तुत किया गया था।
- ये रिजर्व निजी या सामुदायिक स्वामित्व वाली भूमि पर बनाए गए हैं, जहां स्थानीय समुदाय वन्यजीवों और पारंपरिक संरक्षण मूल्यों की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आवास संरक्षण में भाग लेते हैं।
- **प्रमुख प्रावधानों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
  - इन रिजर्वों के अंदर भूमि उपयोग में परिवर्तन के लिए रिजर्व प्रबंधन समिति और राज्य सरकार से अनुमोदन की आवश्यकता होती है।
  - मुख्य वन्यजीव वार्डन के पास रिजर्व के प्रबंधन का समग्र अधिकार होता है।

WLPA और FRA: एक संभावित संघर्ष

- **वन अधिकार अधिनियम (FRA), 2006,** पवित्र उपवनों सहित वनों पर वनवासी समुदायों के पारंपरिक अधिकारों को मान्यता देने के लिए अधिनियमित किया गया था।
- WLPA के अंतर्गत पवित्र उपवनों को सामुदायिक रिजर्व के रूप में वर्गीकृत करने का निर्णय FRA के उद्देश्य के विपरीत है।

T.N. गोदावर्मन बनाम. भारत संघ मामला (1996)

- इस मामले में, उच्चतम न्यायालय ने वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 की धारा 2 की व्याख्या की। न्यायालय ने निर्णय दिया कि 'वन भूमि' में सम्मिलित हैं;
  - शब्दकोश के अनुसार 'वन' माने जाने वाले क्षेत्र।
  - सरकारी अभिलेखों में वन के रूप में दर्ज कोई भी क्षेत्र, चाहे उसका स्वामित्व किसी का भी हो।

आगे की राह

- **समावेशी नीति निर्माण:** पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को स्थानीय समुदायों के परामर्श से एक व्यापक पवित्र ग्रोव संरक्षण नीति विकसित करनी चाहिए, तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शासन व्यवस्था वन अधिकार अधिनियम के अनुरूप हो।
- **सह-प्रबंधन दृष्टिकोण:** वन विभाग को पूर्ण नियंत्रण हस्तांतरित करने के बजाय, ग्राम सभाओं और वन अधिकारियों के बीच सह-प्रबंधन मॉडल पर विचार किया जा सकता है।
- **कानूनी सामंजस्य:** क्षेत्राधिकार संबंधी विवादों को रोकने और सामुदायिक अधिकारों को बनाए रखने के लिए WLPA एवं FRA के बीच कानूनी सामंजस्य आवश्यक है।

- **पारंपरिक ज्ञान के साथ वैज्ञानिक मानचित्रण:** यद्यपि उपग्रह मानचित्रण महत्त्वपूर्ण है, लेकिन पवित्र उपवनों की पहचान और प्रबंधन में सामुदायिक ज्ञान को एकीकृत किया जाना चाहिए।

Source: TH

शहरी विकास के लिए बजटीय आवंटन

समाचार में

- 2025 में, सरकार ने शहरी विकास के लिए 96,777 करोड़ रुपये आवंटित किए, जो विगत् वर्ष की तुलना में वृद्धि है, लेकिन मुद्रास्फीति के समायोजन के पश्चात्, यह कमी को दर्शाता है।

बजट की प्रमुख बातें

- प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) जैसी प्रमुख योजनाओं में महत्त्वपूर्ण कटौती देखी गई, जो नीतिगत महत्वाकांक्षाओं और वास्तविक व्यय के बीच अंतर को दर्शाती है।
- शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को हस्तांतरण कम कर दिया गया है, तथा GST के कारण राजस्व हानि ने समस्या को जटिल बना दिया है।
- केन्द्रीय क्षेत्र की योजनाओं, विशेषकर मेट्रो परियोजनाओं के लिए अधिक धनराशि उपलब्ध कराई गई, लेकिन स्वच्छ भारत मिशन और स्मार्ट सिटी मिशन जैसे शहरी कार्यक्रमों में कटौती की गई।
- 10,000 करोड़ रुपये के शहरी चुनौती कोष की शुरूआत से पूँजी-गहन बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने पर बल दिया गया है, जबकि सतत् विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक समानता पर सीमित ध्यान दिया गया है।

शहरीकरण वृद्धि

- भारत का शहरीकरण आर्थिक संकट से प्रेरित है, जबकि वैश्विक उत्तर में इसके पश्चात् औद्योगीकरण और औपनिवेशिक धन हस्तांतरण हुआ।
- भारत के शहरीकरण को **"गरीबी-संचालित शहरीकरण"** के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें गाँव से शहर और शहर से शहर दोनों तरह का प्रवास होता है।
- कोविड-19 महामारी ने शहरी नियोजन की अपर्याप्तता को प्रकट किया है, तथा रिवर्स माइग्रेशन ने बुनियादी ढाँचे में अंतराल को दर्शाया है।

भारत में प्रमुख शहरी चुनौतियाँ

- शहरी जनसंख्या पर सटीक आँकड़ों का अभाव (2021 की जनगणना अनुपलब्ध); भारत की लगभग 40% जनसंख्या शहरी है।
- **नियोजन संबंधी मुद्दे:** स्थानिक योजनाएँ पुरानी हो चुकी हैं, जिससे भीड़भाड़ और झुग्गी-झोपड़ियाँ उत्पन्न हो रही हैं।
  - योजनाएँ लोगों की जरूरतों को पूरा करने के बजाय पूँजी वृद्धि पर केंद्रित होती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन प्रभाव:** प्रदूषण, शहरी बाढ़ और ऊष्मा द्वीप प्रभाव शहरों को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से दिल्ली के NCR क्षेत्र में।
- **शासन संबंधी चुनौतियाँ:** 74वें संविधान संशोधन के बावजूद, भारतीय शहरों में शहरी नियोजन अलोकतांत्रिक निकायों द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
  - शहरों को अंतर-सरकारी हस्तांतरण के रूप में सकल घरेलू उत्पाद का न्यूनतम 0.5% प्राप्त होता है।

पहल

- **स्वच्छ भारत मिशन-शहरी (SBM-U) 2.0** को सभी शहरों में सुरक्षित स्वच्छता और नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट के वैज्ञानिक प्रसंस्करण के लक्ष्य के साथ पाँच वर्ष की अवधि के लिए 1 अक्टूबर, 2021 को लॉन्च किया गया था।
- शहरों को 'आत्मनिर्भर' और 'जल सुरक्षित' बनाने के लिए 1 अक्टूबर 2021 को अमृत 2.0 लॉन्च किया गया।
- स्मार्ट सिटीज मिशन को कुशल सेवाएँ, मजबूत बुनियादी ढाँचे और सतत् पर्यावरण प्रदान करके 100 चयनित शहरों में जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रारंभ किया गया था।
- **प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (PMAY-U) 2.0** का लक्ष्य आगामी पाँच वर्षों में शहरी गरीब एवं मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए 1 करोड़ घर बनाना है, जिसमें 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश और 2.30 लाख करोड़ रुपये की सरकारी सब्सिडी होगी।

- **स्ट्रीट वेंडिंग योजना:** चुनिंदा शहरों में 100 साप्ताहिक 'हाट' या स्ट्रीट फूड हब का विकास।
  - राज्यों को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अधिक केन्द्रों के लिए स्ट्रीट-वेंडिंग योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया

सुझाव और आगे की राह

- सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में प्रगति हुई है, लेकिन शहरी क्षेत्र अभी भी गरीबी, असमानता और पर्यावरणीय गिरावट का सामना कर रहे हैं।
- भारतीय शहरों के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए शहरी नियोजन, प्रशासन और बुनियादी ढाँचे में सुधार के लिए व्यापक राष्ट्रीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- शहरी विकास के लिए निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है, तथा शहरों को विकास केन्द्र के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।
- शहरी फैलाव को रोकने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए ऊँची इमारतों की तुलना में टिकाऊ, कम ऊँचाई वाले, रेडियल विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

Source: TH

लिंग पहचान के लिए SRY जीन

संदर्भ

- हाल के अध्ययनों में ऐसे असाधारण मामले सामने आए हैं, जिनमें SRY जीन वाले व्यक्ति महिला के रूप में विकसित हुए हैं, जिससे लिंग निर्धारण पर आनुवंशिक प्रभाव की जटिलताओं पर प्रकाश पड़ा है।

SRY जीन (लिंग-निर्धारण क्षेत्र Y)

- Y गुणसूत्र पर स्थित SRY जीन यह निर्धारित करता है कि बच्चा लड़का होगा या लड़की।
  - यदि SRY जीन मौजूद है, तो बच्चे में पुरुष के लक्षण विकसित होंगे और यदि SRY जीन अनुपस्थित है या उत्परिवर्तित है, तो बच्चे में महिला के लक्षण विकसित होंगे।
- SRY जीन एक प्रोटीन उत्पन्न करता है जो DNA से जुड़ता है तथा अन्य जीनों की गतिविधि को नियंत्रित करता है।
- SRY प्रोटीन ऐसी प्रक्रियाएँ प्रारंभ करता है, जो भ्रूण में नर गोनाड (वृषण) विकसित करने का कारण बनती हैं और मादा प्रजनन संरचनाओं के विकास को रोकती हैं।

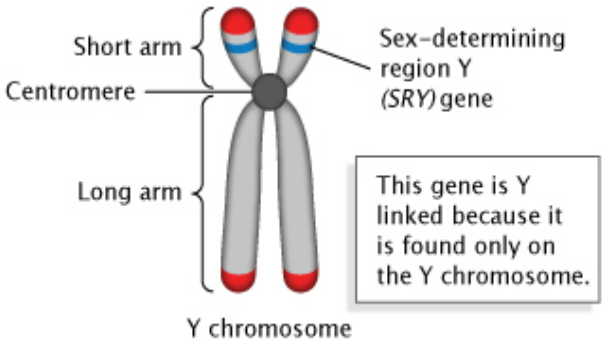

लिंग निर्धारण की प्रक्रिया

- **गुणसूत्र:** प्रत्येक मानव कोशिका में 46 गुणसूत्र या 23 जोड़े होते हैं। इनमें से एक जोड़ी गुणसूत्र लिंग गुणसूत्र होते हैं, जो व्यक्ति के लिंग का निर्धारण करते हैं।
  - **महिला लिंग:** महिलाओं में दो X गुणसूत्र या XX होते हैं।
  - **पुरुष लिंग:** पुरुषों में एक X गुणसूत्र और एक Y गुणसूत्र या XY होता है।
- **निषेचन:** जब एक अंडे को X गुणसूत्र वाले शुक्राणु द्वारा निषेचित किया जाता है, तो परिणामी युग्मनज मादा (XX) होगा। जब एक अंडे को Y गुणसूत्र वाले शुक्राणु द्वारा निषेचित किया जाता है, तो परिणामी युग्मनज नर (XY) होगा।

असामान्य यौन विकास

- दुर्लभ मामलों में, SRY जीन Y गुणसूत्र से X गुणसूत्र में स्थानांतरित हो सकता है।
  - यदि किसी बच्चे को दो X गुणसूत्र विरासत में मिलते हैं, और उनमें से एक में SRY जीन है, तो उनमें सामान्यतः पुरुष संबंधी विशेषताएँ विकसित हो जाती हैं, लेकिन वे बच्चे पैदा करने में असमर्थ होते हैं।
  - हालाँकि, ऐसे दुर्लभ मामले भी हैं, जहाँ दो X गुणसूत्रों और SRY जीन वाले व्यक्ति मादा के रूप में विकसित होते हैं।
- **X गुणसूत्र निष्क्रियता:** यदि किसी महिला के एक्स गुणसूत्रों में से किसी एक पर "पुरुष" जीन (SRY) है, तो वह विशिष्ट X गुणसूत्र (SRY वाला) निष्क्रिय हो जाता है।

- ऐसा इसलिए है क्योंकि SRY-वाहक X में प्रायः अन्य महत्त्वपूर्ण जीन नहीं होते हैं, और इसे बंद करने से विकास संबंधी समस्याएँ रोकी जा सकती हैं।

निष्कर्ष

- SRY जीन पुरुष लिंग निर्धारण में केन्द्रीय भूमिका निभाता है, लेकिन दुर्लभ आनुवंशिक विसंगतियाँ अप्रत्याशित परिणाम उत्पन्न कर सकती हैं।
- अध्ययन में स्थानान्तरण गुणसूत्रों से संबंधित विलोपनों की जांच करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, जो लिंग परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।
- ऐसी आनुवंशिक विविधताओं को समझने से चिकित्सीय परामर्श और यौन विकास विकारों (DSDs) के निदान में सहायता मिल सकती है।

Source: TH

2026 तक वामपंथी उग्रवाद (LWE) को समाप्त करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता

समाचार में

- केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ के बीजापुर में सुरक्षा बलों द्वारा 31 माओवादियों को मार गिराने के पश्चात् 31 मार्च 2026 तक वामपंथी उग्रवाद (LWE) को समाप्त करने के सरकार के लक्ष्य की पुष्टि की।

वामपंथी उग्रवाद (LWE)

- **परिभाषा:** वामपंथी उग्रवाद से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या समूहों से है जो कट्टरपंथी वामपंथी विचारधाराओं को बढ़ावा देते हैं और हिंसा के माध्यम से राज्य को समाप्त करने का प्रयास करते हैं। इसका आधार पश्चिम बंगाल में 1967 के नक्सलबाड़ी विद्रोह हैं।
- **शब्दावली:**
  - माओवादी (वैश्विक शब्द)।
  - नक्सलवादी (भारत-विशिष्ट शब्द, जो पश्चिम बंगाल में 1967 के नक्सलबाड़ी विद्रोह से लिया गया है)।
- **प्रभावित क्षेत्र (लाल गलियारा):**
  - **अत्यधिक प्रभावित:** छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल।
  - **मध्यम रूप से प्रभावित:** आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, केरल।
- **नक्सलवाद में कमी:** वामपंथी उग्रवाद से संबंधित घटनाओं में 53% की कमी (2004-2014 से 16,463 मामले घटकर 2014-2024 तक 7,700 मामले)।
  - नागरिक एवं सुरक्षाकर्मियों की मृत्यु में 70% की कमी।

नक्सलवाद में कमी के कारण

- **रणनीतिक एवं सुरक्षा उपाय:**
  - **समाधान (SAMADHAN) सिद्धांत (2017):**
    - संक्षिप्त नाम समाधान आठ प्रमुख स्तंभों का प्रतिनिधित्व करता है: मजबूत राजनीतिक एवं नौकरशाही कार्यान्वयन के लिए स्मार्ट नेतृत्व (S), सक्रिय सुरक्षा कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने वाली आक्रामक रणनीति (A), सुरक्षा बलों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए प्रेरणा और प्रशिक्षण (M), माओवादी गतिविधियों की निगरानी और ट्रैकिंग में सुधार के लिए कार्रवाई योग्य खुफिया जानकारी (A), वामपंथी उग्रवाद की घटनाओं की वास्तविक समय की निगरानी के लिए डैशबोर्ड-आधारित प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (D), AI, ड्रोन तथा डिजिटल सुरक्षा प्रणालियों के माध्यम से प्रौद्योगिकी का उपयोग (H), आतंकवाद विरोधी प्रयासों के लिए प्रत्येक राज्य के लिए कार्य योजना (A), और माओवादी वित्तपोषण चैनलों एवं अवैध नेटवर्क को बाधित करने के लिए वित्तपोषण तक पहुँच नहीं (N)।
- **सैन्य अभियान:**
  - **ऑपरेशन ऑक्टोपस, ऑपरेशन डबल बुल, ऑपरेशन चक्रबंध:** माओवादी ठिकानों के विरुद्ध व्यापक स्तर पर अभियान।
  - **विशेष कार्य बलों का गठन:** CoBRA(कमांडो बटालियन फॉर रेज़ोल्यूट एक्शन), ग्रेहाउंड्स, विशेष खुफिया शाखा (SIB)।
  - **बेहतर खुफिया जानकारी और ड्रोन निगरानी:** माओवादी गतिविधियों पर बेहतर नज़र।
- **बेहतर केंद्र-राज्य समन्वय:**
  - **सुरक्षा संबंधी व्यय (SRE) योजना:** उग्रवाद-विरोधी कार्य हेतु राज्यों को प्रदान की गई धनराशि।

- **विशेष अवसंरचना योजना (SIS):** माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में पुलिस बलों की क्षमता निर्माण।

- **सामाजिक-आर्थिक एवं विकासात्मक पहल:**
  - **आत्मसमर्पण करने वाले कैडरों का पुनर्वास:** समाज में पुनः एकीकरण के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता।
  - वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों में कौशल विकास केन्द्र और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITIs) स्थापित किए गए।
  - **प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY):** आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों के लिए 15,000 आवास स्वीकृत किए गए।
  - **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) की पहल:** आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों को वित्तीय स्थिरता के लिए पशुधन उपलब्ध कराना।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

फोर्ट विलियम का नाम परिवर्तित कर विजय दुर्ग कर दिया गया

संदर्भ

- पूर्वी सेना कमान के मुख्यालय, कोलकाता स्थित फोर्ट विलियम का नाम परिवर्तित कर विजय दुर्ग कर दिया गया है।
  - फोर्ट विलियम के अंदर किचनर हाउस का नाम बदलकर मानेकशॉ हाउस कर दिया गया है और दक्षिण गेट, जिसे पहले सेंट जॉर्ज गेट के नाम से जाना जाता था, अब शिवाजी गेट है।

फोर्ट विलियम

- पहला फोर्ट विलियम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1696 में हुगली नदी के पूर्वी तट पर बनाया गया था।
- इसका नाम इंग्लैंड के राजा विलियम तृतीय के नाम पर रखा गया था।
- **संरचना:** यह किला अपनी अनियमित अष्टकोणीय संरचना और धनुषाकार खिड़कियों के लिए जाना जाता है।
- इसमें छह द्वार हैं: चौरंगी, प्लासी, कलकत्ता, वाटर गेट, सेंट जॉर्ज और ट्रेज़री गेट।
- भारत का सबसे बड़ा पार्क मैदान किले के सामने स्थित है।
- 1756 में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने किले पर हमला कर उस पर नियंत्रण कर लिया, जिसके कारण कुख्यात 'कलकत्ता का ब्लैक होल' नामक घटना घटी।
- प्लासी के युद्ध (1757) के पश्चात् जब अंग्रेजों ने पुनः नियंत्रण प्राप्त कर लिया, तो रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में 1758 एवं 1781 के बीच एक नई और अधिक सुदृढ़ संरचना का निर्माण किया गया।

Source: TH

भारत में पोटाश खनन

समाचार में

- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से राजस्थान में पोटाश के भंडार की पहचान हुई है, जिससे भारत की आयात पर निर्भरता कम करने का अवसर मिला है।

पोटाश क्या है?

- पोटाश से तात्पर्य पोटेशियम युक्त खनिजों से है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से उर्वरकों में किया जाता है (90% उपयोग)।
- **अनुप्रयोग:** NPK उर्वरकों (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम) में तीन प्राथमिक पोषक तत्त्वों में से एक।
- पोटाश फिटकरी जल की कठोरता को दूर करने में सहायता करती है और इसमें जीवाणुरोधी गुण होते हैं।
  - कांच-सिरेमिक, साबुन और डिटर्जेंट तथा विस्फोटकों के उत्पादन में उपयोग किया जाता है।
- **पोटाश उर्वरकों के प्रकार:**
  - **पोटाश सल्फेट (SOP):** प्रीमियम, क्लोराइड मुक्त, फलों और सब्जियों के लिए उपयोग किया जाता है।
  - **म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP):** इसमें क्लोराइड होता है, जिसका उपयोग गेहूँ जैसी कार्बोहाइड्रेट फसलों के लिए किया जाता है।

भारत में पोटाश भंडार

- पंजाब और राजस्थान को महत्त्वपूर्ण भंडार वाले प्रमुख राज्यों के रूप में पहचाना गया।
  - **पंजाब:** फाजिल्का और श्री मुक्तसर साहिब जिलों में पोटाश के भंडार।
  - **राजस्थान:** नागौर-गंगानगर बेसिन, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू और बीकानेर जिले। अकेले राजस्थान का योगदान 89% है।

भारत के लिए पोटाश खनन क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- **आयात निर्भरता कम करना:** भारत वर्तमान में प्रतिवर्ष 50 लाख टन पोटाश का आयात करता है।
- **घरेलू उर्वरक उद्योग को बढ़ावा देना:** कृषि आत्मनिर्भरता को बढ़ाएगा।
- **आर्थिक लाभ:** रोजगार सृजन और क्षेत्रीय आर्थिक विकास।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

- **पर्यावरण एवं भूमि संबंधी मुद्दे:** पंजाब में पोटाश के भंडार सतह से 450 मीटर नीचे हैं।
  - किसानों को भूमि अधिग्रहण और आजीविका की हानि का भय है।
  - सरकार का दावा है कि खनन में उन्नत ड्रिलिंग प्रणाली का उपयोग किया जाएगा जिसका भूमि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
  - पर्यावरणीय एवं सामाजिक प्रभाव आकलन किया जा रहा है।

सरकारी नीति और वर्गीकरण

- **पोषक तत्त्व आधारित सब्सिडी (NBS):** वास्तविक पोषक तत्त्व सामग्री (N, P, K) के आधार पर सब्सिडी प्रदान करता है।
- **महत्त्वपूर्ण खनिज स्थिति:** घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने और आयात निर्भरता को कम करने के लिए खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन (MMDR) अधिनियम, 2023 के अंतर्गत मान्यता प्राप्त।

Source: IE

कुक द्वीप समूह (Cook Islands)

संदर्भ

- न्यूजीलैंड ने कुक द्वीप समूह द्वारा चीन के साथ सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर करने की तैयारी के संबंध में गंभीर चिंता व्यक्त की है।

परिचय

- **राजनीतिक स्थिति:** कुक द्वीप समूह न्यूजीलैंड के साथ स्वतंत्र सहयोग वाला एक स्वशासित राष्ट्र है। यह 1901 से 1965 तक न्यूजीलैंड पर आश्रित उपनिवेश था।
- **अवस्थिति:** कुक द्वीप समूह दक्षिण प्रशांत महासागर में पोलिनेशिया, ओशिनिया में स्थित हैं।
  - वे न्यूज़ीलैंड के उत्तर-पूर्व में, अमेरिकी समोआ और फ्रेंच पोलिनेशिया के बीच स्थित हैं।
  - राष्ट्र में 15 द्वीप हैं, जिनका कुल भूमि क्षेत्रफल लगभग 236.7 वर्ग किलोमीटर है। ये द्वीप ज्वालामुखी गतिविधि से बने थे।
- प्रशासनिक मुख्यालय अवारुआ है, जो रारोटोंगा द्वीप पर स्थित है।

Source: TH

बाल्टिक राष्ट्र (Baltic Nations)

समाचार में

- तीनों बाल्टिक राज्यों ने यूरोपीय संघ के साथ अधिक निकटता से जुड़ने तथा सुरक्षा बढ़ाने के लिए अपनी विद्युत प्रणालियों को रूस के पावर ग्रिड से पृथक् कर दिया

बाल्टिक राष्ट्र

- बाल्टिक राज्य यूरोप के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में हैं और इसमें बाल्टिक सागर के पूर्वी तट पर स्थित एस्टोनिया, लाटविया और लिथुआनिया देश सम्मिलित हैं।
- वे पश्चिम और उत्तर में बाल्टिक सागर से घिरे हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र को यह नाम मिला है, पूर्व में रूस, दक्षिण-पूर्व में बेलारूस और दक्षिण-पश्चिम में पोलैंड स्थित है।

बाल्टिक सागर

- विश्व में लवणीय जल का सबसे बड़ा विस्तार, अर्ध-संलग्न एवं अपेक्षाकृत उथला।
- बाल्टिक सागर उत्तरी अटलांटिक महासागर की एक शाखा है। यह स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप, उत्तरी यूरोप, पूर्वी यूरोप और मध्य यूरोप की मुख्य भूमि एवं डेनिश द्वीपों से घिरा हुआ है।
- बाल्टिक सागर को कृत्रिम रूप से व्हाइट सी नहर द्वारा व्हाइट सागर से और कील नहर द्वारा उत्तरी सागर से जोड़ा गया है।
- इसमें बोथनिया की खाड़ी, फिनलैंड की खाड़ी, रीगा की खाड़ी और ग्दान्स्क की खाड़ी शामिल हैं।

Source :TH

नेत्ज़ारिम कॉरिडोर

संदर्भ

- इजरायल-हमास युद्धविराम समझौते के तहत इजरायली सेनाएँ नेत्ज़ारिम कॉरिडोर से हट गई हैं।

नेत्ज़ारिम कॉरिडोर के बारे में

- नेत्ज़ारिम कॉरिडोर गाजा पट्टी में भूमि की एक पट्टी थी जो संघर्ष के दौरान इज़रायली सैन्य नियंत्रण में थी।
- यह 2023-2025 गाजा युद्ध के दौरान इज़राइल रक्षा बलों (IDF) द्वारा स्थापित एक रणनीतिक सैन्य क्षेत्र था।
- यह गाजा-इज़राइल सीमा से भूमध्य सागर तक विस्तारित था, तथा गाजा पट्टी को प्रभावी रूप से दो भागों में विभाजित करता था।
- इस गलियारे का नाम पूर्व इजरायली बस्ती नेत्ज़ारिम के नाम पर रखा गया था जो कभी इस क्षेत्र में मौजूद थी।

Source: FE

मिथुन (Mithuns)

समाचार में

- अरुणाचल प्रदेश में, मिथुन राजमार्गों पर दृश्यता में सुधार लाने और घातक दुर्घटनाओं को रोकने के लिए फ्लोरोसेंट कॉलर पहनेंगे।

मिथुन (बोस फ्रंटालिस) के बारे में

- मिथुन को प्रायः 'पहाड़ों का मवेशी' कहा जाता है।
- यह भारत के पूर्वोत्तर पहाड़ी क्षेत्रों के उपोष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में पाली जाने वाली एक दुर्लभ मवेशी प्रजाति है।
- यह अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड का राज्य पशु है।
  - यह मणिपुर और मिजोरम की पहाड़ियों में भी पाया जाता है।
- **IUCN स्थिति:** संवेदनशील
- **महत्त्व:** मिथुन अपने मांस, दूध और भार वहन क्षमता के लिए बहुमूल्य माने जाते हैं।
  - वे पूर्वोत्तर के कई आदिवासी समुदायों के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - इसका होना समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

Source: TH

अभ्यास 'साइक्लोन 2025'

समाचार में

- राजस्थान के महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में अभ्यास 'साइक्लोन 2025' प्रारंभ हुआ।

अभ्यास 'साइक्लोन 2025'

- यह भारत और मिस्र के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास है।
  - अभ्यास का पहला संस्करण 2023 में भारत में आयोजित किया गया था।
- यह 14 दिवसीय अभ्यास है जिसका उद्देश्य पेशेवर कौशल साझा करके रक्षा सहयोग को बढ़ाना और रेगिस्तानी वातावरण में विशेष बलों की अंतर-संचालन क्षमता में सुधार करना है।

Source :PIB

■■■■